वार्षिक रिपोर्ट
ANNUAL REPORT
1987–88

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS
NEW DELHI

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

वार्षिक रिपोर्ट
1987-88

संकल्पना

दिवंगत श्रीमती इन्दिरा गांधी का जीवन और उनके प्रयत्न सदा सम्पूर्ण भारत के एक सर्वांगीण एवं सांगोपांग स्वरूप के लिए समर्पित रहे। वह अन्य बातों के साथ-साथ इस बात के लिए सदा प्रयत्नशील रहीं कि मानव जीवन में कलाओं की भूमिका केन्द्रीय होनी चाहिए। वह भारत के लोगों, उनके जीवन और कला से प्रेरणा प्राप्त करती थीं। साथ ही वह एक अंतर्द्रष्टा की भांति आत्मनिरीक्षण भी खूब करती थीं। वह बहुधा इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करती थीं कि ''मानव वास्तव में एकाकी होता है और उसे अपने आंतरिक सर्जनात्मक संसाधनों पर निर्भर रहना चाहिए''। आत्मचिंतन का आंतरिक जीवन और व्यापक रूप से सक्रिय सहभागिता का बाह्य जीवन उनके जीवन के दो परस्पर पूरक आयाम थे जो पूर्ण रूप से एक दूसरे से मिले हुए थे।

भारत सरकार ने श्रीमती इन्दिरा गांधी की पुण्य स्मृति में अनेक प्रकार के स्मारक बनाने का निश्चय किया, उनमें से एक था इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र स्थापित करने का निर्णय।

प्रधानमंत्री ने 19 नवम्बर, 1985 को औपचारिक रूप से इस संस्था का शुभारंभ किया और नई दिल्ली के सेन्ट्रल विस्टा क्षेत्र में 23 एकड़ के भूखंड पर इस केन्द्र के भवन परिसर का एक सर्वोत्तम डिजाइन प्राप्त करने के उद्देश्य से एक अन्तर्राष्ट्रीय डिजाइन प्रतियोगिता की घोषणा की।

उद्देश्य

केन्द्र के मुख्य उद्देश्य हैं:

(i) कलाओं, विशेषकर लिखित, मौखिक, श्रव्य, दृश्य, चित्रात्मक आदि सभी रूपों में उपलब्ध प्राथमिक सामग्री के प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करना;
(ii) संदर्भ ग्रंथों, शब्दावलियों, शब्दकोशों और विश्वकोषों आदि के अनुसंधान और प्रकाशन कार्यक्रमों का संचालन करना;
(iii) जनजातीय लोक कलाओं का सुव्यवस्थित ढंग से वैज्ञानिक अध्ययन करने के उद्देश्य से एक जनजातीय लोक कला संग्रहालय की स्थापना करना;
(iv) प्रस्तुतियों, प्रदर्शनियों, बहुविध संचार साधनों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों और कार्यशालाओं के आयोजन द्वारा वास्तुकला एवं साहित्य से लेकर संगीत, मूर्तिकला, चित्रकला, फोटोग्राफी, मृद्भांड शिल्प, कठपुतली कला, बुनाई एवं कशीदाकारी तक की विभिन्न कलाओं के विषय में और उनके बीच सर्जनात्मक एवं समीक्षात्मक संवाद के लिए मंच उपलब्ध कराना;
(v) अनुसंधान कार्यक्रमों और कला प्रशासन के ऐसे आदर्श (मॉडल) विकसित करना जो भारतीय प्रकृति और वास्तविकता की दृष्टि से अधिक उपयुक्त हों।

न्यास का निर्माण

भारत सरकार ने अपने दिनांक 19 मार्च, 1987 के संकल्प संख्या फा. 16-7/86-कला के द्वारा यह निर्णय लिया कि इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एक पूर्णतः स्वायत्त न्यास होगा जिसका नाम ''इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास'' होगा।

उपर्युक्त संकल्प के अनुसार उसके पहले न्यासी (ट्रस्टी) हैं:—

1. श्री राजीव गांधी, न्यास अध्यक्ष
   7, रेसकोर्स रोड,
   नई दिल्ली
2. श्री रा. वेंकटरामन,
   6, मौलाना आजाद रोड,
   नई दिल्ली
3. श्री पी.वी. नरसिंह राव,
   9, मोतीलाल नेहरू मार्ग,
   नई दिल्ली
4. श्रीमती पुपुल जयकर,
   11, सफ्दरजंग रोड,
   नई दिल्ली
5. श्री ब्रह्मदत्त,
   17, कैनिंग रोड,
   नई दिल्ली
6. श्री एच.वाई. शारदा प्रसाद,
   सी.-1/1 लोदी गार्डन्स,
   नई दिल्ली
7. डा. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन, न्यास की सदस्य सचिव
   डी.-1/23 सत्य मार्ग,
   नई दिल्ली

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास का 24 मार्च, 1987 को उप-पंजीयक नई दिल्ली के यहां उनकी अतिरिक्त पुस्तक संख्या IV, खण्ड संख्या 1369 में पृष्ठ संख्या 42-60 पर विधिवत पंजीयन हुआ और उसकी पंजीयन संख्या 1680 है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की पहली बैठक 10 फरवरी, 1988 को हुई।

संगठन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की संकल्पनात्मक योजना में बताए गए उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, केन्द्र ने अपना भवन बनने से पहले ही अपने कार्यक्रमों पर कार्रवाई शुरू कर दी। उनको कार्यान्वित करने के लिए, केन्द्र के निम्नलिखित पांच प्रभाग हैं:-

इन्दिरा गांधी कला निधि: यह प्रभाग कलाओं, मानविकी विषयों और सांस्कृतिक धरोहर (परम्पराओं) की एक कम्प्यूटरीकृत राष्ट्रीय सूचना प्रणाली एवं डेटा बैंक है, जिसे संबल प्रदान करने के लिए बहुविध संग्रहों से सुसज्जित एक सांस्कृतिक संदर्भ पुस्तकालय है, ताकि यह मानविकी विषयों तथा कलाओं में अनुसंधान के लिए एक प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य कर सके।

इन्दिरा गांधी कला कोश: इस प्रभाग का प्रमुख कार्य है — कलाओं से संबंधित भारतीय परंपरा के आधारभूत ग्रंथों की अविच्छिन्न श्रृंखला का शोध संकलन एवं प्रकाशन, कलाओं तथा शिल्पों की बुनियादी तकनीकी शब्दावलियों के संग्रह एवं अन्तर्शास्त्रीय या अंतर्विषयक शब्दकोश तैयार करना; भारतीय कलाओं पर लिखी गई समीक्षात्मक पुस्तकों का पुनर्मुद्रण और भारतीय कलाओं के एक बहुखंडीय विश्वकोश का निर्माण।

इन्दिरा गांधी जनपद संपदा: इस प्रभाग का कार्य लोक तथा जनजातीय कलाओं और शिल्पों से संबंधित महत्वपूर्ण सामग्री के संग्रहण एवं प्रलेखन तथा जनजातीय समुदायों की जीवन शैलियों के बहुविषयक अध्ययन के लिए व्यवस्था करना है, जिससे कि समग्र भारतीय सांस्कृतिक दृश्य प्रपंच और पर्यावरणात्मक, पारिस्थितिक, कृषि विषयक, औषधि संबंधी तथा अन्य आयामों के ताने-बाने के वैकल्पिक मॉडल तैयार किए जा सकें।

इन्दिरा गांधी कला दर्शन: कला एवं संस्कृति के समेकित विषयों तथा संकल्पनाओं पर अंतर्विधात्मक अंतर्विषयक संगोष्ठियों एवं प्रदर्शनियों के लिए एक मंच की व्यवस्था करना इस प्रभाग का कार्य है।

सूत्रधार: अन्य सभी प्रभागों को प्रशासनिक, प्रबन्धकीय और संगठनात्मक सहायता तथा सेवाएं प्रदान करने के लिए है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का संगठनात्मक/कार्यात्मक चार्ट अनुबन्ध-1 पर संलग्न है।

कार्यकलाप

कला निधि (संदर्भ पुस्तकालय)

नगण्य रूप में प्रारम्भ हो कर केन्द्र के पुस्तकालय ने अब एक अच्छा आकार ग्रहण कर लिया है। मार्च, 1988 के अन्त में इसके पास 10,880 पुस्तकें थीं। खरीदी गई पुस्तकों का मूल्य लगभग 16 लाख रुपए था। खरीदी गई पुस्तकों के अलावा पुस्तकालय को उपहारस्वरूप (स्व.) राष्ट्रीय प्रोफेसर डा. सुनीति कुमार चटर्जी के संग्रह से 27,000 ग्रंथ, (स्व.) श्री ठाकुर जयदेवसिंह के संग्रह से 1200 पुस्तकें और श्री कृष्ण कृपलानी से 1500 पुस्तकें मिलीं। जर्मन संघीय गणराज्य सरकार और मैक्समूलर भवन के सौजन्य से भी उपहारस्वरूप पुस्तकें मिलीं।

जापान फाउंडेशन ने भी पुस्तकें और फोटोग्राफ/स्लाइडें भेंट करने का प्रस्ताव किया है। देश-विदेश में स्थित ऐसी अनेक एजेंसियों से भी विभिन्न रूपों में सामग्री भेंट स्वरूप या अन्यथा प्राप्त करने की योजना है; जैसे, ब्रिटिश और सोवियत संग्रहों से पांडुलिपियों की माइक्रोफिल्म/फिश, अमरीकी, दक्षिण एशिया कला संघ से स्लाइडें और कई अन्य देशों से भी इसी प्रकार की सामग्री।

सांस्कृतिक संदर्भ पुस्तकालय केन्द्र को फोर्ड फाउंडेशन से मिले अनुदान में से अत्याधुनिक सूक्ष्मलेखी (माइक्रोग्राफिक) और अन्य उपकरण अपने यहां स्थापित कर रहा है।

कला निधि (राष्ट्रीय सूचना प्रणाली)

कलाओं, मानविकी विषयों और सांस्कृतिक परंपराओं (धरोहर) पर कम्प्यूटरीकृत राष्ट्रीय सूचना प्रणाली और डेटा बैंक ने वर्ष के दौरान लाखों अप्रकाशित प्राचीन भारतीय पांडुलिपियों और उनकी सूचियों; सांस्कृतिक महत्व के श्रव्य और दृश्य श्रव्य अभिलेखों; चित्रकारियों, फोटोग्राफों, स्लाइडों जैसी द्विआयामी दृश्य सामग्री और अन्य सांस्कृतिक वस्तुओं से संबंधित जानकारी को कूटबद्ध करने के लिए "डेटा बेस" तैयार करने का अति कठिन कार्य हाथ में लिया।

संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाओं की पांडुलिपियों के संबंध में डेटा के संग्रह और पुनः प्राप्ति के लिए आवश्यक रोमन अक्षरों पर लगाने के लिए उच्चारण निर्देशी चिह्न निर्धारित करने का कार्य संपन्न हो चुका है। बम्बई के राष्ट्रीय सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकी केन्द्र को देवनागरी लिपि के लिए "डेस्क-टाप" प्रकाशन प्रणाली विकसित करने का काम सौंपा गया है। यह प्रकाशन प्रणाली कालांतर में अन्य भारतीय लिपियों पर भी लागू की जा सकेगी, साथ ही, भाषाविदों के एक समूह को भारतीय लिपियों के लिए लिप्यंतरण संबंधी नियम बनाने का काम सौंपा गया है ताकि लिखित सामग्री को दूसरी लिपियों में अपने आप लिखा जा सके।

अन्य विकसित की गई सुविधाओं में शामिल हैं — एच.पी. 3000/42 प्रणाली पर "मिनिसिस" डेटा बेस के साथ यूजर फ्रैंडली इंटरफेस, हिटफाइल का पी.सी. में रूपान्तरण, डेटा निर्यात आदि। ऑप्टीकल डिस्क भंडारण की प्रायोगिक परियोजना भी हाथ में लेने का विचार है।

कला निधि (सांस्कृतिक अभिलेखागार)

कला निधि में एक सांस्कृतिक अभिलेखागार बनाया जाएगा, जिसमें विद्वानों, कलाकारों और अन्य विशिष्ट व्यक्तियों के

निजी संग्रह रखे जाएंगे। इन संग्रहों में विख्यात फोटोग्राफरों के संग्रह, संगीत रिकार्डों के संग्रह, थियेटर सामग्री आदि के संग्रह शामिल होंगे। इन सभी संग्रहों को भेंट स्वरूप या अन्यथा प्राप्त करने का कार्य विभिन्न अवस्थाओं में हो रहा है।

कला कोश

फरवरी, 1987 में वाराणसी में हुई प्रख्यात विद्वानों और शिक्षाविदों की बैठक में हुए विचार-विमर्श के अनुसरण में, कुछ चुने हुए विद्याकेन्द्रों में कलाओं, मानविकी विषयों और विज्ञान के क्षेत्र में भारतीय विश्व दृष्टिकोण तथा परंपरागत ज्ञान को दर्शाने वाली बुनियादी तकनीकी शब्दावलियों के पारिभाषिक शब्द संग्रह/कोश के निर्माण का कार्य शुरू किया गया। इसका प्रारंभिक संकलन 1988-89 के प्रारंभ में होने वाली विद्वानों की अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला के लिए तैयार हो जाएगा। उसमें विचार-विमर्श के बाद ही इसे प्रकाशित किया जाएगा। इसी के साथ-साथ भारतीय परंपरा के आधारभूत ग्रंथों की श्रृंखला का भी चयन व निर्धारण किया जा चुका है और इस ग्रंथ माला के कुछ प्रामाणिक ग्रंथों के प्रकाशन कार्य हाथ में लिया जा चुका है। ये ग्रंथ हैं: मात्रालक्षण, दत्तिलम, प्रतिमालक्षणम्।

कला कोश प्रभाग द्वारा भारतीय कला और संस्कृति से संबंधित अनेक पांडित्यपूर्ण समीक्षात्मक कृतियों को पुनर्मुद्रण के लिए चुना गया है इस पुनर्मुद्रण श्रृंखला में सबसे महत्वपूर्ण कृति है विश्वविख्यात विद्वान डा. आनन्द के. कुमारस्वामी की कृतियों का संग्रह, कुछ अप्रकाशित शोधपत्रों के साथ-साथ उनकी कृतियों के संग्रह के पुनः प्रकाशन की व्यवस्था दिवंगत विद्वान के पुत्र के परामर्श से पूरी कर ली गई है। कुमारस्वामी के कुछ चुने हुए पत्र इस पुनर्मुद्रण माला में सबसे पहले प्रकाशित किए जाएंगे और ये मुद्रणार्थ प्रेस भेजे जा चुके हैं। विलेम स्टुट्टरहैम की श्रेष्ठ कृति "राम लीजेंड एण्ड राम रिलीफ" जो कि इंडोनेशिया के प्राम्बनन मंदिरों के भित्तिचित्रों से संबंधित है, मूल जर्मन से अंग्रेजी में अनुदित की जा चुकी है। केन्द्र इसे प्रकाशित करने जा रहा है। अनेक दक्षिण-पूर्व एशियाई भाषाओं में उपलब्ध बौद्ध भजनों स्तोत्रों की सहायता से अवलोकितेश्वर स्तोत्र का मूल संस्कृत पाठ फिर से तैयार करने का काम प्रकाशनार्थ पूरा हो चुका है।

जनपदा संपदा

जनजातीय और लोक कलाओं के सुव्यवस्थित एवं वैज्ञानिक अध्ययन, विश्लेषण और प्रलेखन के लिए कार्यालय के अन्दर तथा बाहर क्षेत्र में किए जाने वाले कार्यकलापों की योजनाएं बनाना और उन्हें कार्यान्वित करना जरूरी होता है। कार्यालय के अन्दर जिन सुविधाओं की योजना बनाई गई है उनमें एक है जनजातीय और लोक कलाओं की स्थायी वीथी। इसमें शामिल होंगे—पाषाण पर बनी चित्रकारियों, वाद्य यंत्र आदि और लोक तथा जनजातीय परंपरा से संबंधित स्लाइडों, टेपों तथा श्रव्य-दृश्य सामग्री के सुव्यवस्थित महत्वपूर्ण संग्रह। क्षेत्र स्तरीय कार्यक्रम में शामिल होंगे—जनजातीय कलाओं की एटलस के निर्माण की एक अल्पकालिक परियोजना और कुछ चुने हुए लक्ष्यगत क्षेत्रों पर विश्लेषणात्मक अध्ययन की एक दीर्घकालिक परियोजना, जैसे बृहदीश्वर मंदिर और श्रीनाथ जी (वैष्णव भक्ति संप्रदाय) मंदिर संबंधी सांस्कृतिक परंपराओं का अध्ययन।

स्थायी वीथी के लिए सर्वप्रथम भीमबेटका की शैल कला की चित्रकारियों को प्राप्त किया जा चुका है और अब केरल तथा कर्नाटक की कर्मकांडीय कलाओं की स्लाइडें तथा श्रव्य टेप प्राप्त होने वाले हैं, जिन्हें लोक तथा जनजातीय कला के महत्वपूर्ण संग्रहों में शामिल किया जाएगा। ब्रज और नाथद्वारा की कलाओं के अध्ययन और प्रलेखन का कार्य भी प्रारम्भ हो चुका है। बृहदीश्वर मंदिर को केन्द्र बिन्दु मानते हुए परियोजना की रूपरेखा को अंतिम रूप दिया जा चुका है। जनजातीय कलाओं की एटलस के निर्माण से संबंधित परियोजना की रूपरेखा भी तैयार हो चुकी है।

जनजातीय जीवन शैलियों से संबंधित गौण स्रोत सामग्री की जांच के लिए बहु-विषयक क्षेत्र स्तरीय अध्ययन करने वाले दल संदर्भ ग्रंथ सूचियां तैयार करने के काम में लगे हैं। इसके साथ ही ये जीवन शैलियों से संबंधित अनुभवसिद्ध डेटा को सुव्यवस्थित करने और विश्लेषण के लिए कम्प्यूटरबद्ध डेटा माड्यूल तैयार करने के लिए संकल्पना संबंधी महत्वपूर्ण शब्दों का एक सार-संग्रह तैयार करने का काम भी कर रहे हैं।

पूर्व-औद्योगिक काल के समुदायों की जीवन शैलियों के अध्ययन के लिए एक वैज्ञानिक कार्यप्रणाली को योजनाबद्ध करना जरूरी है ताकि ऐसे वैकल्पिक मॉडल्स तैयार किए जा सकें जिनमें भौतिक और गैर-भौतिक दोनों प्रकार के कक्ष शामिल हों,

जिससे कि उनकी कला तथा सांस्कृतिक परंपराओं के संबंध में नए बोध उत्पन्न किए जा सकें। यह कार्य क्षेत्र स्तरीय तदर्थ प्रयोगों की एक परिवर्द्धित श्रृंखला के माध्यम से शुरू किया जा चुका है, जिसके अन्तर्गत सर्वप्रथम छोटा नागपुर के संथालों की जीवन शैली के अध्ययन को लिया गया है।

कला-दर्शन

पिछले वर्ष "आकाश" (दिक्) के समेकित विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी और संगोष्ठी की कलाकारों तथा शिक्षाविदों द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। इसी से प्रोत्साहित हो कर केन्द्र ने सुलेखन विषय पर इसी श्रृंखला के अंतर्गत "आकार" नाम की एक दूसरी प्रदर्शनी लगाने की योजना बनाई है। 1988-89 में आयोजित की जाने वाली इस प्रदर्शनी की तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। उसके बाद "रथ" नामक एक और प्रदर्शनी आयोजित की जाएगी, जिसका विषय होगा "काल समय"। इस बीच "खं" नामक पहली प्रदर्शनी, जिसका विषय "आकाश" था, के श्रव्य-दृश्य प्रलेखन का काम पूरा हो चुका है और तत्संबंधी अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी "चिदाकाश और भूताकाश" का कार्य विवरण भी तैयार हो चुका है।

सूत्रधार

इस प्रभाग के मुख्य कार्य हैं — विभिन्न प्रभागों के लिए कार्मिकों की व्यवस्था करना, उनको प्रशासनिक सहायता देना, सचिवालयिक कर्तव्य संभालना, लेखा कार्य तथा अन्य सामान्य प्रबंध के पक्षों की देखभाल करना जिसमें सामान की पूर्ति तथा सेवाओं की व्यवस्था करना भी शामिल है।

वर्ष 1987-88 के लेखों को अंतिम रूप दिया जा चुका है। वर्ष के दौरान केन्द्र को भारत सरकार से परिचालन अनुदान के रूप में 25 लाख रुपए की सहायता मिली। यह अनुदान न्यास की मूल निधि (कॉर्पस फंड) के लिए मिले 25 करोड़ रुपए के अक्षय निधि अनुदान और केन्द्र के भवन निर्माण के लिए मिले 2.94 करोड़ रुपए के अनुदान के अलावा थी। यद्यपि यह केन्द्र के कार्यचालन का पहला वर्ष था तथापि वह 30.96 लाख रुपए की परिसंपत्तियां खरीद तथा और 28.92 लाख रुपए का सेवा व्यय कर सका, जिसमें सेवाओं तथा पूर्तियों और अनुसंधान परियोजनाओं के लिए अग्रिम दी गई राशियां शामिल हैं। अधिशेष निधियों का न्यास के निर्देशों के अनुसार लाभप्रद रूपों में निवेश कर दिया गया। वर्ष के अंत में निवेशों की कुल राशि 27.94 करोड़ रुपए थी, जिसमें मुख्य रूप से मूल निधि के 25 करोड़ रुपए और उस पर अर्जित ब्याज का पुनर्निवेश शामिल था।

केन्द्र ने गत वर्ष "आकाश" (दिक्) के समेकित विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं प्रदर्शनी के आयोजन के लिए और विदेश स्थित सांस्कृतिक केन्द्रों के अध्ययन दौरों के लिए, कला विभाग के माध्यम से, यूनेस्को से सहायता प्राप्त करने की व्यवस्था की थी। चालू वर्ष में, यूनेस्को के आम सम्मेलन में एक संकल्प पारित करके इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में एक ऐसी समेकित परियोजना शुरू करने के लिए स्वीकृति प्रदान की, जिससे दक्षिण पूर्व एशिया की कला और सांस्कृतिक परंपराओं से संबद्ध डेटा बेस (आधारों) का विकास और उनकी व्यवहार्यता प्रदर्शित हो सके। सम्मेलन द्वारा इस प्रयोजन के लिए अपेक्षित धनराशि प्रदान करने का भी संकल्प पारित किया गया। केन्द्र द्वारा एक समेकित परियोजना की तैयारी का काम शुरू किया जा चुका है। एक अन्य संकल्प द्वारा यूनेस्को ने उन प्रस्तावों को भी स्वीकृति प्रदान की जिनमें उद्गम देशों को उनकी लुप्त सांस्कृतिक संपदा के बहुविध प्रलेखन तालिकागत वस्तुओं की पूर्ति पर बल दिया गया था। कला विभाग द्वारा प्रायोजित एक अन्य संकल्प द्वारा एशिया और प्रशांत क्षेत्र के लिए एक क्षेत्रीय कार्यशाला के आयोजन को स्वीकृति प्रदान की गई ताकि कुछ चुने हुए उत्कृष्ट केन्द्रों में बढ़िया आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग करते हुए जीवन शैलियों के अध्ययन के लिए कुछ प्रायोगिक परियोजनाएं प्रारंभ की जा सकें जिससे कि विभिन्न समुदायों की जीवन शैलियों के संबंध में परस्पर सांस्कृतिक समझ-बूझ, बोध और ज्ञान प्राप्त करने में सुविधा हो।

कला विभाग के माध्यम से पोलैंड, फ्रांस, नार्वे, चेकोस्लोवाकिया, फिनलैंड, यूगोस्लाविया और हंगरी के साथ हुए अंतरसरकारी सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के भाग लेने की भी व्यवस्था की गई। भारत और अन्य एशियाई देशों से संबंधित सांस्कृतिक स्रोत सामग्री के आदान-प्रदान के लिए दूसरे कई देशों के साथ संपर्क स्थापित किया गया है। शुरू-शुरू में यह सामग्री रिप्रोग्राफिक प्रतियों और प्रलेखन के अन्य रूपों में होगी।

अपने कर्मचारियों के लिए आवास की व्यवस्था एक बहुत कठिन समस्या थी जिसका केन्द्र को अपनी स्थापना के बाद तुरंत सामना करना पड़ा। शहरी विकास मंत्रालय के माध्यम से, केन्द्रीय मंत्रिमंडल से एक निर्णय प्राप्त किया गया जिसके अंतर्गत वे सरकारी कर्मचारी दो वर्ष तक उन्हें मिला सरकारी क्वार्टर रख सकेंगे जो इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के निर्माण की प्रारंभिक अवस्थाओं की अवधि में प्रतिनियुक्ति, पुनर्नियुक्ति अथवा अन्यथा केन्द्र की सेवा में आएं। मंत्रिमंडल से यह निर्णय भी प्राप्त कर लिया गया है कि एशियाई ग्राम के 15 फ्लैट केन्द्र को आवंटित कर दिए जाएं ताकि वह अपने कर्मचारियों के आवास की व्यवस्था कर सके।

किसी भी नए संगठन के प्रशासनिक तथा वित्तीय कार्यकलापों पर लागू होने वाले नियम, विनियम और उपविधियां बनाना हमेशा ही एक महत्वपूर्ण, तत्कालकरणीय और अति कठिन कार्य होता है क्योंकि यही वह नींव है जिस पर समग्र संगठन के भावी प्रासाद का निर्माण होता है। इस दिशा में प्रयत्न किए गए हैं और सूत्रधार प्रभाग उपविधियों, सेवा नियमों और भरती नियमों के मसौदे तैयार कर रहा है। उन पर विभिन्न स्तरों पर विचार हो रहा है, और जब ये तैयार हो जाएंगे तो उन्हें कार्यकारी समिति के समक्ष विचारार्थ रख दिया जाएगा। तथापि, इस बीच दैनिक भत्ते की दरों और यात्रा के विभिन्न वैकल्पिक साधनों की हकदारी के संबंध में अंतिम निर्णय लेकर आदेश जारी कर दिए गए हैं।

भवन परिसर

19 नवम्बर, 1985 को प्रधानमंत्री ने भवन परिसर के लिए एक अंतरराष्ट्रीय डिजाइन प्रतियोगिता की घोषणा की। एतदर्थ एक व्यावसायिक सलाहकार सहित सचिवालय स्थापित किया गया और विश्व के सभी भागों में इस प्रतियोगिता को विज्ञापित किया गया।

भारतीय तथा विदेशी वास्तुविदों (वास्तुकारों) की ओर से इस प्रतियोगिता का सोत्साह स्वागत हुआ। शुरू में 926 वास्तुविदों ने आवेदन भेजे, 684 पंजीकृत किए गए। भारत सहित 37 देशों से 194 डिजाइन प्राप्त हुए। इस प्रतियोगिता के तकनीकी डोसियर की तथा जिस कुशलता से यह डिजाइन प्रतियोगिता संचालित की गई, उसकी अंतर्राष्ट्रीय वास्तुविद संघ, पेरिस सहित व्यावसायिक समुदाय ने प्रशंसा की।

प्राप्त प्रविष्टियों की उपयुक्तता पर विचार करने के लिए नवम्बर, 1986 के शुरू में एक अंतर्राष्ट्रीय जूरी की बैठक हुई। इस जूरी में निम्नलिखित शामिल थे:-

1. बी.वी. दोशी, भारत
2. श्री जेम्स स्टर्लिंग, यू.के.
3. श्री फ्यूमिहिको माकी, जापान
4. श्री ओलुफेमी मजेकोडुन्मी, नाइजीरिया
5. श्री ए.पी. कन्विंदे, भारत
6. डॉ. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन, भारत
7. श्री हबीब रहमान, भारत
8. श्री ज्योफ्रे बावा, श्री लंका
9. श्री फ्रेई ओट्टो, पश्चिम जर्मनी

अन्तर्राष्ट्रीय जूरी ने नाम तथा अन्य ब्यौरों के संबंध में कड़ी गोपनीयता के सामान्य नियमों का पालन करते हुए प्रविष्टियों को आंका। 19 नवम्बर, 1986 को विज्ञान भवन में आयोजित एक समारोह में प्रधानमंत्री ने एक मोहरबंद लिफाफा खोला। उसी समय पहली बार स्वयं जूरी के सदस्यों को भी डिजाइन प्रतियोगिता के विजेताओं के नामों का पता चला।

10 लाख रुपए का प्रथम पुरस्कार प्रिंस्टन, अमेरिका के एक वास्तुविद श्री रॉल्फ लर्नर द्वारा प्रस्तुत डिजाइन को दिया गया।

5 लाख रुपए का दूसरा पुरस्कार दिल्ली स्थित भारतीय वास्तुविद श्री गौतम भाटिया की डिजाइन प्रविष्टि को मिला।

3 लाख रुपए का तीसरा पुरस्कार फ्रांस की सुश्री फ्रैंन्कोइस-हेलीन जोर्डा, लंदन के श्री डेविड जेरी डिक्सन और ग्रीस के श्री एलेंडैक्सॉस तोंबेसिस के बीच बराबर-बराबर बांटा गया।

जूरी के निर्णयों की घोषणा के फलस्वरूप, अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता की शर्तों के अनुसार, 9 दिसम्बर, 1986 के दिन विजेताओं को पुरस्कार राशि प्रदान की गई। प्रो. रॉल्फ लर्नर को पुरस्कार संयुक्त राज्य अमेरिका में भारत के राजदूत श्री पी.के. कौल द्वारा वहाँ भारतीय राजदूतावास में आयोजित एक समारोह में दिया गया।

परियोजना के निष्पादन के लिए जुलाई, 1987 में एक भवन समिति गठित की गई जिसमें निम्नलिखित व्यक्ति रखे गए:-

अध्यक्ष

1. श्री आबिद हुसैन

विख्यात वास्तुविद

2. श्री जे.एन. भल्ला
   अध्यक्ष, भारतीय वास्तुकला परिषद्
3. श्री ए.पी. कनविंदे,
   सदस्य, अन्तर्राष्ट्रीय जूरी
4. श्री रंजीत साबिखी,
   प्रतियोगिता के लिए व्यावसायिक सलाहकार

सरकार के प्रतिनिधि

5. सचिव, शहरी विकास
6. सचिव, व्यय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्य

7. श्रीमती पुपुल जयकर
8. श्री एच.वाई., शारदा प्रसाद
9. डा. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन

सदस्य सचिव

10. श्री के.डी. बाली

भवन समिति ने उस भारतीय वास्तुविद के बारे में भी अपना अनुमोदन दे दिया है जो भवन परियोजना के लिए प्रो. रॉल्फ लर्नर के साथ संबद्ध किया जाएगा।

संरचनात्मक डिजाइनों, विद्युत तथा यांत्रिक इंजीनियरी सेवाओं के लिए अमेरिका स्थित परामर्शदाताओं और उनके भारतीय सह-परामर्शदाताओं के संबंध में भवन समिति में सम्यक् विचार-विमर्श के बाद प्रो. रॉल्फ लर्नर को उनके नाम सूचित कर दिए गए हैं। केन्द्र के विभिन्न प्रभागों की निराली आवश्यकताओं को देखते हुए, व्यावसायिकों और विशेषज्ञों के साथ कई बार चर्चा करने और भवन समिति में विचार करने के बाद, वास्तुविद को उन विशेष बातों के बारे में सूचित कर दिया गया है, जो डिजाइन में शामिल की जाएगी। सड़कों, सीवर लाइनों, जलपूर्ति की लाइनों, मौजूदा वृक्षों आदि सभी पक्षों का ध्यान रखते हुए स्थल का सूक्ष्म सर्वेक्षण किया जाना था। यह काम अब पूरा हो चुका है।

दिल्ली नगर कला आयोग, सेन्ट्रल विस्टा समिति से परियोजना के संबंध में अनुमोदन प्राप्त कर लिया गया है। साथ ही इस

क्षेत्र में निर्माण के लिए ऊंचाई संबंधी प्रतिबंधों के संबंध में शहरी विकास मंत्रालय से छूट ले ली गई है। दिल्ली विकास प्राधिकरण के उद्यान विकास द्वारा भी स्थल की ब्यौरेदार जांच कर ली गई है ताकि उन वृक्षों का पता लगाया जा सके जिन्हें आवश्यक हो तो प्रत्यारोपण द्वारा भी सुरक्षित रखा जाना है। वास्तुविद को यह भी कहा गया है कि वह भवन बनाने के लिए स्थान का निर्धारण कुछ इस प्रकार करे कि कम से कम पेड़ों को हटाने की आवश्यकता हो।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के भवन परिसर के निर्माण के लिए सेन्ट्रल विस्टा क्षेत्र में जो 22.949 एकड़ का भूखंड दिया गया है उस पर 208 कर्मचारी क्वार्टर थे जिन को खाली कराने में कई गंभीर समस्याएं उपस्थित हो गई क्योंकि इन क्वार्टरों के अधिकांश निवासी उनमें कई दशकों से रह रहे थे। प्रधानमंत्री के सचिव, रक्षा सचिव, और दिल्ली के उपराज्यपाल के हस्तक्षेप से इन क्वार्टरों को शांतिपूर्वक खाली करा लिया गया और उन्हें गिराने का काम चल रहा है। अब केवल डा. राजेन्द्र प्रसाद रोड बंगला नं. 3 ही बाकी रहा है जिसे खाली करा कर केन्द्र को सौंपा जाना है। यह बंगला इस समय केन्द्रीय सतर्कता आयोग के कब्जे में है, जिन्हें उसके बदले में बीकानेर हाउस में स्थान दे दिया गया है। पर वे अभी तक वहां स्थानांतरित नहीं हुए हैं।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के लिए कला विभाग के वर्ष 1987-88 के बजट में 3.3 करोड़ रुपए और 1988-89 के बजट में 4 करोड़ रुपए की राशि की व्यवस्था की गई है।

अनुबंध — 1

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

कला निधि	कला कोश	जनपद संपदा	कला दर्शन	सूत्रधार
क	क	क	क	क
संदर्भ पुस्तकालय	कलातत्त्वकोश	प्रांति	संग्रह	कार्मिक
ख	ख	ख	ख	ख
राष्ट्रीय सूचना प्रणाली और डेटा बैंक	कला मूलशास्त्र	शैल कला की स्थायी दीर्घा	प्रदर्शनियां एवं संगोष्ठियां	वित्त एवं लेखे
ग	ग	ग	ग	ग
सांस्कृतिक अभिलेखागार	पुनर्मुद्रण श्रृंखला	जीवन शैली अध्ययन लोक परंपरा एवं क्षेत्र संपदा संबंधी अनुसंधान	प्रलेखन	गृह व्यवस्था सामान्य प्रबंध
घ	घ	घ	घ	घ
सेवागार संग्रह	विश्वकोश परियोजना	बाल अनुभाग व कठपुतली थियेटर	कार्य विवरण एवं प्रकाशन	भवन परियोजना
		ङ		
		स्टूडियो तथा संरक्षण प्रयोगशाला		